ISSN:2583-8849



डॉ. रघुराज सिंह कर्मयोगी
कोटा, राजस्थान

राष्ट्र निर्माण में राष्ट्रभाषा हिंदी की भूमिका

4 अक्टू.1977 को पूर्व विदेश मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में हिंदी में ही बोल रहे थे। हिंदी में उनका यह प्रथम संबोधन था। अटल जी ने राजभाषा हिंदी को कार्यालय और आम जीवन की बोलचाल के क्षेत्र से निकालकर संयुक्त राष्ट्र संघ के भूमंडलीय मंच पर हिंदी का परचम लहरा दिया था। जब भी संयुक्त राष्ट्र संघ का कोई कार्यक्रम होता था। राष्ट्राध्यक्ष अंग्रेजी में ही अपनी बात कहते थे। अंग्रेजी में संबोधन को गौरवान्वित अनुभव करते थे। लेकिन जापान, जर्मन, रूस, चीन जैसे देशों ने अपनी मातृभाषा में संयुक्त राष्ट्र भाषण दे कर अंग्रेजी के इस मिथक को तोड़ दिया था। इसके बाद वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री का पद ग्रहण करने के बाद सन् 2014 में संयुक्त राष्ट्र संघ के अधिवेशन में शामिल होने न्यूयॉर्क गए। उस अधिवेशन में श्री नरेंद्र मोदी ने श्री अटल बिहारी वाजपेयी का अनुसरण करते हुए हिंदी में ही उद्बोधन दिया। सभी देशों के राष्ट्राध्यक्ष हिंदी वर्जन को अपनी भाषाओं में परिवर्तित करने वाले यंत्र से मोदी जी का भाषण सुन रहे थे। इस तरह हिंदी को व्यापक फलक मिला।

वर्ष 2019 में भी संयुक्त राष्ट्र के अधिवेशन में शामिल होने पुनः न्यूयॉर्क गए थे। तब भी उन्होंने हिंदी में ही भाषण देकर भारत और राष्ट्रभाषा हिंदी का मान बढ़ाया। इसी तरह 12 दिसंबर 2026 को ब्रिक्स देशों का अधिवेशन नई दिल्ली में हुआ। इस अवसर पर प्रधानमंत्री जी ने दो दिन की गतिविधियों का लेखा जोखा हिंदी में ही प्रस्तुत किया।इस अधिवेशन में शामिल सभी देशों के प्रतिनिधियों को उन्होंने हिंदी में ही संबोधित किया। वहां उन देशों के प्रतिनिधिमंडलों से द्विपक्षीय बातचीत हिंदी में ही कर रहे थे। यह भारतवासियों के लिए गौरव की बात थी। इसके लिए हमें पीछे इतिहास में जाना होगा। पहले अंग्रेजों का दुनिया के एक बड़े भूभाग पर शासन रहा चुका था। संसार में उनका सूर्य अस्त नहीं होता था। उन्होंने अंग्रेजी को सभी देशों में संपर्क भाषा के रूप में स्थापित किया। वैसे भी ऐसा माना जाता है कि ब्यूरोक्रेट्स, बड़े-बड़े न्यायाधीश, सचिवालय में सेक्रेटरी, अकादमियों के अध्यक्ष या विदेश सेवा के पदों जैसे राजदूत या राज्यों के राज्यपाल इन सब पदों पर बैठना है तो अंग्रेजी पढ़नी ही पड़ेगी। यह सुना भी जाता है कि अधिकतर मंत्रियों या बड़े-बड़े राजनेताओं के प्रियजन, पुत्र, पुत्रियां विदेशों में अंग्रेजी में ही शिक्षा ग्रहण करते हैं।

लेकिन भारत की बात करें तो अब हिंदी की क्षमता, गरिमा, महिमा और प्रभाव को रेखांकित किया जा रहा है। उसे सभी राज्यों में उचित स्थान मिल रहा है। अब हिंदी साहित्यिक चौपालों पर होने वाले कवि सम्मेलन और काव्य गोष्ठियों से निकलकर उद्योगों में अपना स्थान बना रही है। भारत 140 करोड़ लोगों का देश है। हर देश चाहता है कि वह भारत के साथ व्यापार करे। दूसरे देशों को भारत में उद्योग स्थापित करने हैं या अपना माल यहां बेचना है तो हिंदी भाषा सीखनी ही पड़ेगी। यह बात विदेशी अच्छी तरह समझ चुके हैं। इसलिए उन्होंने अपने यहां हिंदी के लिए अध्ययन संस्थान एवं प्रशिक्षण केंद्र बनाए हैं। जो एक दूसरे के व्यापार को बढ़ाने में सहायक होते हैं। गैर हिंदी भाषी राज्यों में भले ही हिंदी का विरोध होता हो। परंतु हिंदी अपने ममतामयी शीतल स्पर्श से वहां की स्थानीय भाषाओं को अपने साथ लेकर चलती है। यह मंदिरों के मरमरे प्रकाश स्तंभों पर दस्तक देती हुई राष्ट्रीय सिंहासन पर धीरे-धीरे आसीन होती जा रही है। राजभाषा हिंदी को फिल्मों,टीवी धारावाहिकों, चित्रहार जैसे रोचक गीतमालाओं से सजे हुए कार्यक्रमों, फेसबुक, यूट्यूब, व्हाट्सएप, सोशल मीडिया आदि ने कार्यालय से लेकर घरों के बेडरूम तक में हिंदी का प्रवेश हो गया है। इसमें कंप्यूटर और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस भी अपनी भूमिका निभा रहे हैं। अब हिंदी का विकास इतना आगे बढ़ चुका है कि वह कार्यालयों से निकल कर नमक बनाने वाले, हवाई जहाज,

रेलवे,बसें चलाने वाले लोग, चाय के बागानों में चाय की पत्तियां तोड़ने वाले हाथ हिंदी के समर्थन में आगे आ रहे हैं। निराला, सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिलीशरण गुप्त,बिहारी, दिनकर,महाकवि तुलसीदास, सूरदास आदि कवियों के हिंदी गीतों से निकली चिंगारी की गरमाहट को भारतीय समाज महसूस कर रहा है। उनके गीतों कविताओं कहानियों को गुनगुना रहा है। परीक्षाएं स्कूल कॉलेज की हों या संघ लोक सेवा आयोग,विभिन्न सेवा आयोगों की हों। उन सब में जो प्रश्न पत्र हिंदी अंग्रेजी दोनों भाषाओं उपलब्ध कराए जाते हैं। इससे हिंदी के प्रभाव का ग्राफ ऊंचा चढ़ता चला जा रहा है।

गृह मंत्रालय ने हिंदी को बढ़ावा देने के लिए सभी कार्यालय में, शहरों में अपनी-अपनी अलग-अलग हिंदी कार्यान्वयन समितियां बनाई हुई हैं। उन सबको मिलाकर नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का गठन किया है। जिससे वह एक दूसरे के संपर्क में रहते हैं। प्रति माह बैठकें करते हैं। जहां कार्य की प्रगति का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया जाता है। प्रगति का जायजा लेते हैं। उनकी मासिक रिपोर्ट हिंदी में ही जारी की जाती हैं। केंद्र और राज्य दोनों में हिंदी के लिए मंत्रालय स्तर पर सलाहकार समितियां स्थापित की गई हैं। जो अपने अपने विभागों में हिंदी के कार्यान्वयन को उचित मार्गदर्शन देती हैं। गृह मंत्रालय ने तकनीकी क्षेत्र में पुस्तक लिखने के क्षेत्र में बहुत बड़ा कार्य किया है। विज्ञान,इंजीनियरिंग,मेडिकल पुरातत्व, विधि विभाग, निजी क्षेत्र तथा सरकारी क्षेत्रों में योजनाएं निरंतर चलती रहती हैं। जिनमें कर्मचारी एवं लेखकों को नगद राशि पुरस्कार स्वरूप दी जाती है। उन विभागों में कर्मचारियों को लिखित परीक्षाएं, साक्षात्कार,ज्ञान संवर्धन हिंदी में करने से ज्ञान समझना सरल हुआ है।

मैंने पाया है कि चिकित्सा के क्षेत्र में दवाइयां के पैकेट,रैपर, शीशियां, उनके इंजेक्शन आदि की पैकिंग उन सब पर हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में दवाओं के नाम लिखे होते हैं। इससे पता चलता है कि राजभाषा हिंदी हर क्षेत्र में हर स्तर पर अपने पैर पसार चुकी है। यह कारवां थमा नहीं है। वह आगे और आगे बढ़ता ही चला जा रहा है। रेलवे हिंदी का बहुत बड़ा संवाहक संस्थान है। यहां कागजी कार्य बंद कर दिया गया है। सभी कार्य कंप्यूटरों पर हो रहा है। कंप्यूटर के कर्सर से निकली ध्वनि हिंदी की सरगम बनकर कर्मचारियों के हृदय में उतर रही है। अब किसी को भी हिंदी में कार्य करने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं होती है। बल्कि सेल्फ स्टार्टेड बैटरी की तरह कर्मचारी खुद ही हिंदी में कार्य करता है। रेलवे में हर मंडल और मुख्यालय स्तर पर कवि सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं। काव्य गोष्ठियां और निबंध प्रतियोगिताएं होती है। कर्मचारियों को प्रोत्साहन दिया जाता है। इस तरह रेलवे में राजभाषा हिंदी में खूब काम हो रहा है। कोटा मंडल रेल चिकित्सालय मे स्थानीय कवियों द्वारा रघुराज सिंह कर्मयोगी के नेतृत्व में मरीजों को दो महीने तक निरंतर कविताएं सुनाई गईं। जिसके सुखद परिणाम देखने को मिले। मरीज को स्वास्थ्य लाभ हुआ। माहौल में परिवर्तन हुआ तो वे प्रसन्न होकर जल्दी ठीक हो गए।

राष्ट्रभाषा हिंदी को आगे बढ़ाने में बाल साहित्य विशेष भूमिका निभा रहा है। बचपन में बच्चों का चरित्र निर्माण, विज्ञान के प्रति अभिरुचि और राष्ट्र भक्ति पैदा करना बाल साहित्य से हो रहा है। जिससे हिंदी बाल साहित्य के माध्यम से बच्चों के लिए मां की भूमिका निभा रही है। बच्चे बचपन से ही हिंदी में पारंगत हो कर देश के अच्छे नागरिक बनकर देश की सेवा कर रहे हैं। बच्चे प्रोढ़ साहित्य पढ़ना पसंद नहीं करते। वह बाल साहित्य खूब पढ़ते हैं। बाल साहित्य उनका मनोरंजन भी करता है। उन्हें भविष्य की दिशा तय करने में मार्गदर्शन करता है। बच्चे कल का भविष्य हैं। वह हिंदी में बात करेंगे, हिंदी सीखेंगे, हिंदी पढ़ेंगे,बोलेंगे तो हिंदी के विकास को कोई नहीं रोक सकता। आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी संस्थाओं,अकादमियों को चुस्त दुरुस्त बनाया जाए। क्योंकि स्थिति यह है कि आम चुनाव होने से दो साल पहले अकादमियों में अध्यक्ष नियुक्त किए जाते हैं। ऐसे में यह संस्थाएं हिंदी के लिए इतना कुछ नहीं कर पाती जितनी जनता को अपेक्षा होती है।